प्रदेश के 49 जिलों में होगी प्राकृतिक खेती

जितेंद्र उपाध्याय • लखनऊ

- नदियों के किनारे पांच किमी की परिधि के गांवों का होगा चयन
- बख्शी का तालाब और मलिहाबाद बनेगा प्राकृतिक खेती का माडल

देसी गाय पर आधारित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की प्रदेश सरकार की मंशा को नए साल में अमली जामा पहनाने की तैयारियां पूरी हो गई हैं। नदियों के किनारे पांच किमी की परिधि के गांवों के किसानों के चयन की प्रक्रिया पूरी हो गई है। समूह में 1,200 किसानों को इसमे शामिल किया गया है। सभी को प्रशिक्षण के साथ ही प्राकृतिक खेती के लाभों के बारे में बताया जाएगा। इस महीने के अंत तक प्राकृतिक खेती भी शुरू कर दी जाएगी। लखनऊ के बख्शी का तालाब और मलिहाबाद ब्लाक को प्राकृतिक खेती के लिए चुना गया है। दोनों ब्लाकों को माडल के तौर पर विकसित किया जाएगा। केंद्र और प्रदेश सरकार इसमें किसानों की मदद करेंगी।

प्राकृतिक खेती और जैविक खेती में अंतर: बख्शी का तालाब स्थित डा.चंद्रभानु गुप्त कृषि महाविद्यालय के कृषि विशेषज्ञ डा. सत्येंद्र सिंह ने बताया कि प्राकृतिक खेती शून्य लागत वाली खेती है, जिसकी खाद की फैक्ट्री देसी गाय और दिन-रात काम करने वाला मित्र केंचुआ है। उन्होंने बताया, प्राकृतिक खेती की विधि विज्ञान आधारित है। इसका प्रयोग करने से रासायनिक तत्वों का खेत में उपयोग, मिट्टी की उर्वरा शक्ति को समाप्त कर देता है। जैविक खेती की उत्पादकता धीमी गति से बढ़ती है और आवश्यक खाद के लिए गोबर की बहुत अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है। जैविक खेती में उत्पादन लेने में देरी भी होती है।

49 जिलों में होगी प्राकृतिक खेती की शुरुआत

26 जिलों में केंद्र सरकार देगी बढ़ावा

23 जिलों में प्रदेश सरकार करेगी मदद

60 गांव चयनित हैं लखनऊ में

इन जिलों का चयन: लखनऊ, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, हापुड़, बुलंदशहर, अमरोहा, संभल, कासगंज, अलीगढ़, बदायूं, शाहजहांपुर, हरदोई, कन्नौज, फर्रुखाबाद, कानपुर नगर, उन्नाव, रायबरेली, फतेहपुर, प्रतापगढ़, कौशांबी, प्रयागराज, मीरजापुर, भदोही, चंदौली, गाजीपुर, बलिया, बाराबंकी, अयोध्या, सुलतानपुर, अमेठी, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बस्ती, गोरखपुर, बलरामपुर, देवरिया, कानपुर देहात, औरैया, इटावा, मैनपुरी, आगरा, मथुरा, सोनभद्र, पीलीभीत, शामली व सहारनपुर को शामिल किया गया है।

> प्राकृतिक खेती के लिए किसानों का चयन किया गया है। इसमे ऐसे किसानों को शामिल किया गया है, जिनके पास कम से कम एक देसी गाय जरूर हो। दूसरे चरण में देसी गाय के इच्छुक किसानों को शामिल किया जाएगा। गो-आधारित प्राकृतिक खेती के लिए खाद और कीटनाशक देसी गाय के गोबर और मूत्र से बनते हैं। इनमें दाल का बेसन, गुड़, मुट्ठी भर मिट्टी और 200 लीटर पानी मिलाना पड़ता है। इससे बनने वाली जीवामृत लाभकारी होता है। लखनऊ में एक हजार हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती की जाएगी।
>
> -डा. एके मिश्र, उप कृषि निदेशक, लखनऊ मंडल

लुढ़क रहा तापमान, आलू की फसल पर झुलसा का प्रकोप

संसू, बख्शी का तालाब : मौसम में परिवर्तन से आलू की फसल बहुत अधिक प्रभावित हो रही है। विशेषज्ञ द्वारा संभावना जताई जा रही है यदि पारा गिरता रहा तो आलू की फसल को न सिर्फ नुकसान होगा बल्कि उत्पादन भी कम होगा।

बीकेटी स्थित चंद्रभानु गुप्त कृषि महाविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि पारा निरंतर गिरता चला जा रहा है, वह आलू, टमाटर, मिर्च एवं मटर, शिमला आदि फसलों के लिए बहुत हानिकारक होता है। आलू की फसल में इस समय झुलसा बीमारी का प्रकोप बढ़ता है। किसानों को झुलसा बीमारी का प्रबंधन कर लेना चाहिए। प्रकोप आलू की पत्तियों, डंठल एवं कंद पर दिखाई देने लगता है। झुलसा के लक्षण पत्तियों पर छोटे हल्के पीले हरे अनियमित आकार के धब्बे सबसे पहले दिखाई देते हैं। बढ़ने पर धब्बे चारों ओर अंगूठी नुमा सफेद फफूंदी जमा लेते हैं। इस रोग को आसानी से पहचान लिया जाता है। इसके प्रकोप से बचाव के लिए कृषि विशेषज्ञ ने बताया किसानों को कापर आक्सिक्लोराइड 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव कर देने की सलाह विशेषज्ञ देते हैं।

अधिक प्रकोप की होने पर फफूंदी नाशक मैनकोजेब दो ग्राम दवा को प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। यदि यह दवा उपलब्ध नहीं होती है तो कार्बेंडाजिम नामक फफूंदी नाशक की तीन ग्राम मात्रा को एक लीटर पानी की दर से घोल बनाकर के छिड़काव करना चाहिए। उन्होंने बताया कि आलू में इस समय कंद बनना प्रारंभ हो जाता है। आलू 70 से 80 दिन का हो तो प्रति बीघा 10 किग्रा नाइट्रोजन तथा दो किलोग्राम सल्फर का प्रयोग करने से आलू में कंदों का आकार एक समान हो जाता है और उत्पादन भी बढ़ जाता है।

बख्शी का तालाब क्षेत्र में लगी आलू की फसल, जिस पर झुलसा के प्रकोप का खतरा

02 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से कापर आक्सिक्लोराइड का छिड़काव करने की सलाह देते हैं विशेषज्ञ